नवजागरण और भारतेन्दुयुगीन हिन्दी कविता

हिन्दी कविता के लिए 'नवीन जागरण' के संदेशवाहक के रूप में प्रस्फुटित भारतेन्दु-युग सामान्यतः 1857 ई. के विद्रोह से लेकर 1900 ई. में 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन-वर्ष तक माना जाता है . दो संस्कृतियों की टकराहट के इस काल का रचनाकार पहली बार साहित्य को 'संतों की कुटिया' तथा 'सामंतों की चित्रशाला' से निकालकर यथार्थ जीवन के खुले मैदान में प्रस्तुत करता है . इसलिए भारतीय नवजागरण की कोख से उपजी राष्ट्रीय-चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति इस युग के साहित्य में हुई है . भारतेन्दुयुगीन साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है - "भारतेन्दु का पूर्ववर्ती साहित्य संतों की कुटिया से निकलकर राजाओं और रईसों के दरबार में पहुँच गया था . ... वह मनुष्य को देवता बनाने के पवित्र आसन से च्युत होकर मनोविनोद का साधन हो गया था . ऐसा होना वांछनीय नहीं था . जिन संतों और महात्माओं ने काव्य में मनुष्य को देवता बनाने की शक्ति संचारित की थी, उनके चेलों ने उनके नाम पर सम्प्रदाय स्थापित किए, काव्य को देवता बनाने की शक्ति लुप्त हो गई . उनकी सांप्रदायिक, अद्भुत व्याख्याएं शुरु हो गई . और दूसरी ओर कवियों की दुनिया राजदरबारों की ओर खिंच गई .भारतेन्दु ने कविता को इन दोनों ही प्रकार की अधोगातियों के पंथ से उबारा. उन्होंने एक तरफ तो काव्य को फिर से भक्ति की पवित्र मंदाकिनी में स्नान कराया और दूसरी तरफ उसे दरबारीपन से निकालकर लोकजीवन के आमने-सामने खड़ा कर दिया . नाटकों में तो उन्होंने युगांतर उपस्थित कर दिया ."[1] स्पष्ट है कि भारतेन्दुयुगीन हिन्दी काव्य ने साहित्य को मनोविनोद के बदले राष्ट्रीयता एवं लोक जीवन से जोड़कर उसे सामाजिक परिवर्तन का माध्यम प्रस्तावित किया . इतना ही नहीं जिस सामाजिक इकाई में नवजागरण के कार्य संपन्न होते है उसे विद्वानों ने 'जाति' की संज्ञा प्रदान की है . हम जानते हैं कि अंग्रेज-पूर्व भारतीय समाज का निर्माण अनेक जातियों (हिन्दी, बांग्ला, तमिल आदि) अनेक भाषाओँ, वर्ग और संस्कृतियों के मिश्रण से हुआ था . इनमें स्थानीय आबादी के अलावा बहार से आने वाली जातियाँ (तुर्क, पठान, फ़ारसी इत्यादि) भी शामिल थी . रामविलास शर्मा ने इस पूरे सन्दर्भ को ध्यान में रखकर ही भारतेन्दु युग को हिन्दी जाति का निर्माण काल मानते हुए इसे 'नवजागरण काल' की संज्ञा प्रदान की है।

नवजागरण पूरी परंपरा और संस्कृति को वैज्ञानिक तर्क-विधान एवं सामाजिक-राजनैतिक अभिप्राय से जोड़नेवाली चेतना है . इसलिए आधुनिक भावबोध की संगठित अभिव्यक्ति नवजागरण के माध्यम से हुई है . प्रसिद्ध इतिहासकार बिपिन चन्द्र लिखते है- "ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विस्तार और उसके साथ औपनिवेशिक संस्कृति और विचारधारा के प्रचार-प्रसार की प्रतिक्रिया में ही यह लहर उठनी शुरु हुई थी . बाहरी संस्कृति के फैलाव से भारतीयों के लिए यह जरुरी हो गया था कि वह आत्म-निरीक्षण करे . ... हालाँकि औपनिवेशिक संस्कृति के खिलाफ यह प्रतिक्रिया हर जगह और हर समाज में अलग-अलग तरह की हुई, लेकिन यह बात हर जगह शिद्दत के साथ महसूस की गई कि सामाजिक धार्मिक जीवन में सुधार अब जरुरी हो गया है . सुधार की इस प्रक्रिया को आमतौर पर नवजागरण कहा जाता है ."[2] ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भी देखें तो 1857 पूँजीवाद और साम्राज्यवाद बनाम सामंतवाद के मुठभेड़ का काल है . सामंतवाद और पूँजीवाद के इस मुठभेड़ में सामंतवाद की पराजय होती है और पूँजीवादी व्यवस्था का प्रस्थान बिंदु होने के कारण 1857 आधुनिक काल का प्रस्थान बिंदु मान लिया जाता है . बिपिन चन्द्र लिखते हैं - "भारत में ब्रिटिश राज की स्थापना भी एक घटना नहीं थी, बल्कि यह भारतीय

अर्थव्यवस्था और समाज के औपनिवेशीकरणऔर धीरे-धीरे दबाए रहने की लम्बी प्रक्रिया का नतीजा थी . इस प्रक्रिया ने हर स्तर पर भारतीय समाज में असंतोष और क्षोभ को जन्म दिया था ."[3] इन्हीं सब कारणों से विद्वानों का एक वर्ग नवजागरण को जहाँ पश्चिम के परिणामस्वरूप मानते हुए इस बात पर जोर देते हैं कि पश्चिम का ज्ञान-विज्ञान, उसके चिंतन एवं तर्क प्रणाली से जब हिन्दुस्तानी समाज अवगत हुआ तो उनहोंने अंधविश्वास जड़ता और यथास्थितिवाद में डूबे समाज को बाहर निकालने की कोशिश की . वहीं दूसरा वर्ग इसे दो संस्कृतियों (पूरब और पश्चिम) को टकराहट का परिणाम मानता है . नवजागरण की ऐतिहासिक व्याख्याताओं के कुछ ऐसे भी प्रवक्ता हैं जो 1857 के क्रांति की उपेक्षा कर धार्मिक आन्दोलनों अथवा आर्य समाज जैसे संगठनों को ही नवजागरण का वाहक सिद्ध करने की कोशिश करते हैं . परन्तु ऐतिहासिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के हवाले से देखें तो भारतेन्दुयुगीन हिन्दी नवजागरण 1857 के आन्दोलन स्वरूप उत्पन्न हुआ . इसमें एक ओर अनेक धार्मिक एवं सामाजिक आन्दोलनों का प्रभाव था तो दूसरी ओर पूँजीवाद एवं सामंतवाद की टकराहट . इन दोनों के संघर्षपूर्ण द्वंद्व के टकराहट से ही हिन्दी नवजागरण एवं भारतेन्दु-युगीन हिन्दी साहित्य दोनों का विकास होता है .

भारतेन्दु युग मुख्यतः दो संस्कृतियों की टकराहट का काल है . जिसमें "एक ओर मध्ययुगीन दरबारी संस्कृति विद्यमान थी तो दूसरी ओर आम जनता में सामाजिक और राजनीतिक आन्दोलन के लिए वातावरण भी तैयार करना था . साहित्य में, देश में बढ़ते असंतोष को प्रकट करना भर ना था अपितु सदियों से चले आते समाज की हड्डियों में बसे हुए सामंती विकारों से भी मोर्चा लेना था ."[4] इसलिए अंग्रेजी राज्य के स्वरूप की पहचान एवं राष्ट्रीय स्वाधीनता के उद्देश्य के साथ-साथ भारतेन्दुयुगीन नवजागरण के मूलतत्व में सामंतवाद एवं साम्राज्यवाद विरोधी दृष्टि, जनसंस्कृति से लगाव, राष्ट्रीयता की अवधारणा का सूत्रपात साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का अस्त्र समझना तथा अध्यात्म एवं रहस्य का विरोध विद्यमान है .

भारतेन्दुयुगीन कविता अंतर्विरोधी मूल्यों से ग्रस्त साहित्य की कविता है जो सामाजिक संरचना के भीतर से आया है . तत्कालीन परिस्थितियों में भारत जहाँ परतंत्र था वहीं साहित्यिक स्तर पर ब्रजभाषा की काव्य-परंपरा अपने चरम पर विद्यमान थी . यद्यपि काव्य-रचना में भारतेन्दु युग परंपरा को स्थान देता है परन्तु धीरे-धीरे परंपरा का स्थान नवीनता ले लेता है . भारतेन्दु ने जहाँ 'चिर जीवो विक्टोरिया रानी' लिखी वहीं राधाचरण गोस्वामी ने 'हमारो उत्तम भारत देश' कविता लिखकर राष्ट्रीय गौरव को जाग्रत किया . यही अंतर्विरोध इस साहित्य में अनेकी स्तरों पर फलीभूत हुआ है जैसे - राजभक्ति-राष्ट्रभक्ति, परम्परा-नवीनता भक्ति-शृंगार बनाम जन-समस्या तथा बृजभाषा बनाम खड़ी बोली का अंतर्विरोध .

उदा. - "भीतर भीतर सब रस चूसै, हँसि हँसि के तन मन धन मूसै .
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि सज्जन नहिं अंग्रेज ."

1878 ई. तक राष्ट्र-प्रेम संबंधी काव्य के प्रकाशन में वृद्धि देखकर अंग्रेज सरकार ने 'वर्नाकुलर प्रेस एक्ट' पारित करके एक प्रकार से साहित्य-प्रकाशन पर पाबंदी लगा दी थी . देश व्यापी विद्रोह होने के कारण 1882 में इस एक्ट को रद्द कर दिया गया लेकिन 1878 ई. में ही भारतीय शस्त्र एक्ट बनाया गया जिसके द्वारा भारतीयों को शस्त्र रखने की आजादी ख़त्म कर दी गई . इसलिए भारतेन्दु समेत लगभग सभी रचनाकारों ने

इस भेदभाव पूर्ण, नीति के विरुद्ध कविताएँ लिखी . स्वयं भारतेन्दु बार-बार प्रजा से अधिक टैक्स वसूलने, विदेशी वस्तुओं के आयात के कारण देश की बढ़ती निर्धनता पर क्षोभ प्रकट करते हैं . यथा -

"अंग्रेज राज सुख साज सजै सब भारी .
पै धन विदेस चलि जात इहै अति ख्वारी . ."

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो 1874-75 तक की रचनाओं में भारतेन्दु समेत सभी साहित्यकार अंग्रेजी सरकार को न्याय, धर्म तथा दया का अवतार बताते रहे परन्तु विक्टोरिया की घोषणा के बाद भी जब देश की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ तो उनके मन में क्षोभ पैदा हुआ . उन्हें सहज ज्ञात हो गया कि कोरी राजभक्ति से अब काम नहीं चलेगा . इसलिए अंग्रेजी शासन की आलोचना, अतीत पर गर्व, वर्तमान पर क्षोभ के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रीयता की अवधारणा का सूत्रपात किया . यही वह बिन्दु है जो आधुनिक काल को मध्यकाल से अलगाता है तथा अस्मिता की रक्षा के लिए प्रेरित भी करता है . इसी सन्दर्भ में भारतनाथ की कल्पना स्वप्न की काल्पनिक परिकल्पना को तोड़कर सुसुप्त भारतीय मानसिकता को जागृत करने के लिए किया गया है -

"डूबत भारतनाथ जागो बे जागो अब .
आलस दव एहि दहन हेतु चाहुँ दिसि सो लागो . ."

परम्परागत काव्य में जो 'राधानाथ' बनकर केवल नायिकाओं से छेड़छाड़ करते रहे उन्हें भारतनाथ बनाने के प्रेरणा भारतेन्दु की नवजागरण एवं पराधीनता के प्रति छटपटाहट एवं तीव्र आक्रोश को व्यक्त करता है . साथ ही मध्यकालीनता एवं आधुनिकता के अन्तर्द्वन्द्व को भी 'जागो' के द्वारा स्पष्ट किया गया है . ईश्वरीय शक्ति में आस्था जहाँ मध्ययुगीन वृत्ति है वहीं देश के प्रति आस्था आधुनिक भावबोध का सूचक है . रामविलास शर्मा लिखते हैं - "तुलसीदास ने भक्ति के रूप में भारतीय जनता में जो सहज आत्मसम्मान जगाया था वही नई परिस्थितियों में भारतेन्दु के राष्ट्रीय आत्मसम्मान के रूप में विकसित हुआ ."[5]भारतेन्दु युग के दूसरे बड़े लेखक बालकृष्ण भट्ट भी राष्ट्रीयता की भावना के प्रसार को सबसे बड़ा धर्म मानते हुए लिखते हैं - "जिस काम को करने से नेशनलिटी हमारे में आवे . हमको अपनी स्वत्व रक्षा का ज्ञान हो वही मूल धर्म है ."[6]

भारतेन्दु युग की सामाजिक स्थिति एवं साहित्यिक मान्यताओं पर विचार करें तो देश से लेकर विचार तक विदेशी अर्थात् अंग्रेजों के प्रभाव में था . साहित्य बहुत हद तक मन बहलाव या पांडित्य प्रदर्शन का माध्यम भर था इससे किसी प्रकार के परिवर्तन की आशा नहीं की जा सकती थी . इसलिए यह आवश्यक था कि लोगों के बीच स्वदेशी का भाव जगाया जाए जिसे प्रसारित करने का काम भारतेन्दु युगीन रचनाकारों ने किया इसलिए रामस्वरूप चतुर्वेदी ने कहा है कि "स्वदेशी की भावना और राष्ट्र की धर्म-निरपेक्ष परिकल्पना में भारतेन्दु का चिंतन अग्रगामी कहा जाएगा . वे इस प्रसंग में आधुनिक संविधान को बहुत पहले से पूर्वाशित करते दिखाई देते हैं ."[7] रामविलास शर्मा ने भी लिखा है- "हिन्दी भाषी जनता इस बात पर गर्व कर सकती है कि उसके नवजागरण के वैतालिक हरिश्चंद ने 24 वर्ष की अवस्था में स्वदेशी के व्यवहार की एक गंभीर प्रतिज्ञा की थी . उस दिन तरुण हरिश्चंद्र ने न केवल हिन्दी प्रदेश के लिए वरन् समूचे भारत के लिए एक नए युग का द्वार खोल दिया था . उस दिन राष्ट्रीय स्वाधीनता के पावन उद्देश्य से हिन्दी साहित्य का अटूट गठबंधन हो गया था . उस दिन

हरिश्चंद्र की कलम से भारतीय जनता ने अंग्रेजी राज्य के नाश का वारंट लिख दिया था ."[8] महात्मा गाँधी के नेतृत्व में जो स्वदेशी आन्दोलन चला था वह अपने प्रारम्भिक रूप में भारतेंदु युग में प्रारंभ होकर अंग्रेजी शासन के नाश का वारंट जारी कर चुका था . उदा. -

"अपना बोया आप ही खावै, अपना कपड़ा आप बनावै .
माल विदेशी दूर भगावै, अपना चरखा आप चलावै . ."

स्वदेशी उद्योग धंधों की उन्नति तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के मूल में कहीं-न-कहीं स्वदेशी पूँजीवाद को निर्विहीन भावना भी हो सकती है . चूँकि भारतेंदु स्वदेशी पूँजीवाद वर्ग के हिमायती थे तथा उन्हीं के हितों से जोड़कर देश की, औद्योगिक प्रगति का सपना संजो रहे थे . साथ ही वे यह भी मानते थे कि स्वदेशी पूँजीपति वर्ग ढुलमुल होता है . अपने हितों के लिए वह कभी साम्राज्यवाद से समझौता कर लेता है तों कभी उससे लड़ता भी है . इसलिए भारतेन्दुयुगीन लेखकों की रचनाओं में ब्रिटिश हुकूमत के प्रति आशा भरी दृष्टि से परखने की राजभक्ति का जो स्वर है उसके साथ-साथ देशभक्ति की प्रखर भावना भी इस असंगति के मूल में यही दृष्टिकोण है .

भविष्य की उज्ज्वलता केवल अपने वर्तमान से मुठभेड़ करके ही अर्जित की जा सकती है . भारतेन्दु युगीन साहित्य में एक ओर अतीत के स्वर्णकाल के प्रति गहरा आकर्षण है तो दूसरी ओर वर्तमान से मुठभेड़ की ईमानदारी . इस सन्दर्भ में इस युग के रचनाकारों का मूल उद्देश्य उस युग की विवशता का चित्रांकन है, जिससे आगे चलकर सत्याग्रह जैसे आंदोलनों की नींव पड़ी . साथ ही भारतीय काव्यधारा में जन्मभूमि की महत्ता का प्रारंभ तो शुरु से ही मिलता है परन्तु अभी तक यह क्षेत्रीयता की मानसिकता से ऊपर नहीं उठ पाया था . इसलिए इस युग के रचानाकारों ने पहली बार भारतवासी का प्रयोग किया तथा वर्तमान विक्षोम के मूल में दास्ता की बेड़ियों को स्वीकार किया . उदा. -

"कहाँ जाकर करूणानिधि केसव सोए ?
जागत नाहिं कोटि जतन कर भारतवासी रोए ."

भारतेन्दु युगीन पूर्व काव्यों में जिस समाज की अभिव्यक्ति मिलती है वहाँ वैभव और विलास को केन्द्रीयता प्राप्त था . किन्तु जैसे ही इस युग में साहित्यिक-अंतर्वस्तु का केन्द्र जनसामान्य से जुड़ता है वह देश-दुर्दशा के कारणों के साथ-साथ मानवता विरोधी संस्थानों को भी प्रकट करता है . यथा -

"भयी है भारत में कैसी होली, सब अनीति गति हो ली .
पी प्रमाद मदिरा अधिकारी, आज शरम सब धो ली . ."

इतिहास के प्रति भारतेन्दु युगीन रचनाकारों का मोह रहा है . उनके समय की मूल समस्या यह थी कि आम आदमी के मन में अपनी संस्कृति के प्रति हीनता का भाव भर गया था . बिना राष्ट्रीय स्वाभिमान के ये समस्याएँ दूर नहीं हो सकती थी इसीलिए इन्होंने अतीत का गुणगान कर ऐतिहासिक महानता एवं आत्मविश्वास के संचार को अभिव्यक्त किया है . उदा. -

" सबसे पहले जेहि ईश्वर धन बल दीनो
सबके पहले जेहि सभ्य विधाता कीनो .
...कहाँ गए विक्रम भोज राम बलि कर्ण युद्धिष्ठिर
चन्द्रगुप्त चाणक्य कहाँ नासे करिकै थिर ."

भारतेन्दु मंडल के सभी लेखक और पत्रकार न तो नास्तिक थे न धर्म को अफीम समझने वाले चिन्तक . कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में लॉर्ड कर्जन ने कहा था कि एशिया का इतना बड़ा देश अन्धकार में डूबा हुआ है . इनके पास न कोई सभ्यता-संस्कृति है न ही इतिहास और परंपरा . यह भालुओं मदारियों और संन्यासियों का देश है . इसीलिए भारतेन्दु मंडल के लगभग रचनाकारों को सुसुप्त भारतीय मानसिकता की प्रतिकार भावना को न केवल जगाने का प्रयास किया अपितु रूढ़ि और धर्म के नाम पर गलत रिवाजों का विरोध कर भारतीय स्वत्व बोध, राष्ट्रीय संपदा एवं श्रम शक्ति के शोषण की पहचान तथा विदेशी हुकूमत द्वारा भारतीय जनता के उत्पीड़न को भी रेखांकित किया है . उदा. -

"रोवहु सब मिलिकै आवहु भारत भाई .
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई . ."

चूँकि व्यवस्था का संचालन करनेवाली प्रभु शक्तियाँ अपने मूर्खतापूर्ण फैसलों से हमेशा ही जनसामान्य को छलती रही है . इसलिए इस युग में सर्जकों की पैनी नजर साम्राज्यवादी व्यवस्था की क्रूरता और अमानुषिकता को उद्घाटित कर जनविरोधी अवरोधों के ध्वंस और परिवर्तनशील प्रक्रिया को दिग्दर्शित करने की है . इसके लिए उनहोंनेन्याय व्यवस्था के बौद्धिक दिवालीएपन, राजनीतिक अव्यवस्था एवं बाजारवादी भोग संस्कृति के दुष्परिणामों के खिलाफ जनाकांक्षाओं की भविष्य-कल्पना को ब्रिटिश शासन व्यवस्था की खोखली मानसिकता को सूली चढाने के उद्देश्य से शब्दबद्ध किया गया है . उदा. -

"बसिए ऐसे देस नहिं, कनक वृष्टि जो होय।
रहिए तो दुख पाइये, प्राण दीजिए रोय ॥"

भारतेन्दु युग के साहित्य की मौलिकता इस बात में है कि वह जनता के लिए रचा जा रहा था सामंतों एवं उसके मुसाहिबों के मनोरंजन के लिए नहीं . आचार्य रामचंद्र शुक्ल की मान्यता है कि भारतेन्दु युग के लेखकों ने नवजागरण की दिशा इसलिए ग्रहण की चूँकि वे जनजीवन के निकट थे . इसलिए जनहित, समाज सुधार, मातृभाषा का उद्धार एवं आर्थिक-उत्पीड़न जैसे विषयों की ओर कविता को मोड़ने का काम भारतेन्दु एवं उनके समकालीन रचनाकारों ने किया . वे लिखते हैं - "भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने जिस प्रकार गद्य की भाषा का स्वरूप स्थिर करके गद्य साहित्य को देशकाल के अनुसार नए विषयों की ओर लगाया उसी प्रकार कविता की धारा को भी नए क्षेत्रों की ओर मोड़ा . इस नए रूप में सबसे ऊँचा स्वर देशभक्ति की वाणी का था . उसी से लगे हुए विषय लोकहित, समाजसुधार, मातृभाषा का उद्धार आदि थे . हास्य और विनोद के नए विषय भी इस काल में कविता को प्राप्त हुए . ...विषयों की अनेकरूपता के साथ-साथ उनके विधान का ढंग भी बदल चला."[9]भारतेन्दु युग की जनवादी परंपरा उग्र होती साम्राज्य विरोधी चेतना का दर्पण है . तत्कालीन समाज में अकाल, भूखमरी एवं टैक्सों ने जनता को खुद उसके अनुभव से यह सबक सिखाना शुरु कर दिया था कि अंग्रेज राज का मतलब सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की तबाही है . बिना इस राज से छुटकारा पाए किसी भी तरह की उन्नति संभव नहीं है . उदा. -

"बिन धन अन्न लोग सब व्याकुल भई कठिन विपत नर नारी को .
चहुँ दिसि काल परयो भारत में भय उपज्यो महामारी को ."

भारतेन्दु युग के कवियों ने सामाजिक कुरीतियों को व्यापक स्तर पर देखा था किन्तु उसकी अभिव्यक्ति शासन तंत्र के दवाब के कारण खुले रूप में नहीं की जा सकती थी . इसीलिए उन्होंने हास्य-व्यंग्य का सहारा लेकर विरोध एवं परिवर्तन की इच्छा को जनजीवन से जोड़ा है .

"चूरन अमलें सब जो खावै, दूनी रिश्वत तुरन्त पचावै।
चूरन पुलिस वाले खाते, सब कानून हजम कर जाते।।"

इस संक्रांति युग में कवियों ने इतिहास के गौरवशाली पृष्ठों की स्मृति एवं अंग्रेजों की विचारधारा से यथेष्ट प्रेरणा भी ग्रहण की परन्तु देश दुर्दशा के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों को भी उन्होंने युग-जीवन से संपृक्त कर प्रस्तुत किया है और इसी सन्दर्भ में सामाजिक-यथार्थ को बेबाकी से प्रस्तुत किया है . उदा. -

"तीन बुलावे तेरह आवैं । निज निज बिपदा रोए सुनावै ।।
आँखो फूटे भरा न पेट । क्यों सखि सज्जन नहिं ग्रेजुएट ।।"

हिन्दुस्तानी समाज और व्यक्ति की जो रुग्नता है उसका बहुत बड़ा कारण अंधविश्वास है . अंधविश्वास समाज में रोगों को फैलने और जड़ जमाने की सुविधा देता है . इसलिए भारतेन्दु एवं अन्य रचनाकारों ने सामाजिक-विषमता पर चोट कर इसकी गहराई में उतरने का प्रयास किया है . उदा. -

"रचि बहु बिधि के वाक्य पुरानन माँहि घुसाए।
शैव शाक्त वैष्णव अनेक मत प्रगटि चलाए ।
जाति अनेकन करि ऊँचअरु नीच बनायो।।"

सामंती समाज में स्त्रियों को अधिकारहीन करके उन्हें शिक्षा और संस्कृति से वंचित किया जाता रहा है . लेकिन नवजागरण के परिणामस्वरूप ही इस काल में अनेक सामाजिक संस्थाओं जैसे आर्य समाज, ब्रह्म समाज, तदीयसमाज, प्रार्थना समाज आदि का निर्माण हुआ और इन्होंने स्त्री-सम्मान को भी क्रन्तिकारी स्वर में अभिव्यक्त किया है . विधवा विवाह के संबंध में प्रताप नारायण मिश्र लिखते हैं -

विधवा विलपै नित धेनु कों, कोऊ लागत हाथ गोहार नहीं .
पट भूषण बेंचि भरै कर को तबहूँ, लखिए अपार नहीं ."

भारतेन्दु युग पूर्व प्रकृति का चित्रण आलंबन तथा उद्दीपन रूप में प्रधानतः होता था . भारतेन्दु युग एक तरफ जहां परंपरा से प्रभावित था वहीं दूसरी तरफ नवीन जागरण की चेतना भी उसमे मुखरित होती गई . इसलिए यहाँ प्रकृति-चित्रण सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाने लगा . परिणामतः इस युग के कवि जब भी प्रकृति निरूपण करते वे देश की दयनीय अवस्था को नहीं भूलते हैं . उदा. -

"भारत में मची है होरी .
दीन दशा असुअन पिचकारी सब लिलार भिजयोरी ."

भाषा राष्ट्रीय-अस्मिता की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम होती है . जहाँ तक भारतेन्दु युगीन भाषिक-संरचना का सवाल है तो हम देखते हैं कि इस युग का गद्य जहाँ खड़ी बोली में लिखा जा रहा था वही पद्य ब्रजभाषा में . रीतिकाल में यह मान्यता स्थापित हो गई थी कि ब्रजभाषा को छोड़ किसी अन्य भाषा में कविता हो ही नहीं सकती है . भारतेन्दु युगीन काव्य में खड़ी बोली के सृजनात्मक रूप की शुरुआत कर भारतेन्दु व

अन्य रचनाकारों ने इस भ्रम को तोड़ा . हालाँकि काव्य-संपदा का कम हिस्सा ही खड़ी बोली के रूप में दिखाई पड़ता है परन्तु भाव एवं विचारों के स्तर पर वहाँ नवजागरण के संदेश को मुखरित किया गया है . 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल' का आदर्श लेकर चलने वाले इस युग के प्रायः रचनाकारों ने बहुभाषा ज्ञान को महत्व तो दिया है परन्तु निज भाषा-विकास को ही उन्नति का मूल स्रोत स्वीकार किया है .

"अंग्रेजी पढिके यद्यपि, सब गुण होत परवीण।
पै निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।।"

कुछ आलोचकों ने भारतेन्दुयुगीन साहित्य पर हिन्दुवादी होने का आरोप लगाया है . वीरभारत तलवार ने 'रस्साकशी'[10] में परम्परावादी मूल्यों के समर्थक होने के कारण यह सिद्ध करने की कोशिश की कि भारतेन्दु युगीन साहित्य हिन्दुवादी साहित्य है तथा नवजागरण के प्रथम वाहक शिवप्रसाद सितारेहिन्द थे .शिवदान सिंह चौहान 'हिन्दी साहित्य के अस्सी बरस' में लिखते हैं- "भारतेन्दु और उनके समकालीन लेखक हिन्दी और हिन्दू जाति के उद्धार के लिए आन्दोलन करने वाले देशप्रेमी पत्रकार और प्रचारक ही अधिक थे, कवि और साहित्यकार कम ."[11] परन्तु ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को स्वीकारते हुए इस सत्य की प्रतिष्ठा आवश्यक है कि उस युग में हिन्दू शब्द जाति विशेष का बोधक न होकर पूरे हिन्दुस्तान का प्रतीक है . इसे जाति विशेष से संपृक्त करना एक नए प्रकार की बेतुकी राजनीति को जन्म देता है . फिर उस युग को तो लगभग रचनाकारों ने हिन्दू शब्द का प्रयोग करते हुए इसे व्यापक परिप्रेक्ष्य में स्वीकारा है . बलिया वाले व्याख्यान में स्वयं भारतेन्दु ने लिखा है - "इस महामंत्र का जप करो, जो हिन्दुस्तान में रहे, चाहे किसी रंग, किसी जाति का क्यों न हों, वह हिन्दू है . हिन्दू की सहायता करो . बंगाली, मराठी, मद्रासी, वैदिक जैन, ब्राह्मणों, मुसलमान सब एक का हाथ एक पकड़ो ."[12] प्रताप नारायण मिश्र भी लिखते हैं कि -"जपो निरंतर एक जवान . हिन्दी हिन्दू हिन्दोस्तान ."

समग्रतः भारतेन्दु युगीन साहित्यकारों ने नवजागरण को जनजागरण से जोड़कर एक ओर जहाँ राष्ट्रीयता की अवधारणा का सूत्रपात एवं राजनीतिक जागरण का परिचय दिया वहीं दूसरी ओर रूढ़ सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों को सुधारने की प्रेरणा देकर सुधारवादी दृष्टिकोण का परिचय दिया . डॉ. रामविलास शर्मा सही ही मानते हैं कि- "भारतेन्दु युग का साहित्य भारतीय समाज के पुराने ढाँचे से संतुष्ट न रहकर उसमें सुधार चाहता है . वह केवल राजनीतिक स्वाधीनता का साहित्य न होकर मनुष्य की एकता, समानता और भाईचारे का भी साहित्य है . इसलिए हम कह सकते हैं कि भारतेन्दु युग नवजागरण की चेतना से उपजी ऐसी कालजयी रचनाशीलता का प्रमाणिक दस्तावेज है जो नवजागरणकालीन आत्ममंथन की प्रक्रिया को सामाजिक चेतना एवं परिवर्तन की आकांक्षा से जोड़कर साहित्य को कला के साथ-साथ संघर्षशील जीवन मूल्यों का मूलाधार घोषित करती है तथा भारतीय समाज की शाश्वत समस्याओं पर विहंगम दृष्टिपात कर उसे अतीत-खोज, वर्तमान समस्याएँ एवं भविष्य-निर्माण की भव्य प्रेरणा के परिप्रेक्ष्य में पुनः सृजित करती है . तभी तो आधुनिक हिन्दी के विद्रोही कवि निराला ने 1950 में भारतेन्दु जन्मशती उत्सव में भाषण देते हुए कहा था - "मैं उनके दरबार का दरबान मात्र हूँ ."[13] जो व्यक्तित्व किसी के आगे नहीं झुका वह भारतेन्दु के आगे नतमस्तक है . यही भारतेन्दु और इसलिए निश्चित तौर पर भारतेन्दु-युग दोनों की सार्थकता का प्रमाण है .

सन्दर्भ :

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी- हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन संस्करण 2000,पृ. 210
2. बिपिन चन्द्र- भारत का स्वतंत्रता संघर्ष,हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय,दिल्ली संस्करण 1997, पृ. 46
3. वही, पृ. 10
4. रामविलास शर्मा- भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास-परम्परा, राजकमल प्रकाशन पृ. 14
5. वही, पृ.168
6. बालकृष्ण भट्ट निबंध संग्रह- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान,पृ. 5
7. रामस्वरूप चतुर्वेदी- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास,लोकभारती प्रकाशन,संस्करण 2004, पृ. 85
8. रामविलास शर्मा- भारतेन्दु और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ,राजकमल प्रकाशन दिल्ली,संस्करण 2004, पृ. 74
9. रामचंद्र शुक्ल- हिन्दी साहित्य का इतिहास,नागरी प्रचारिणी सभा,काशी,संस्करण 2002, पृ. 319
10. देखें, वीर भारत तलवार- रस्साकशी,सारांश प्रकाशन,दिल्ली,हैदराबाद
11. शिवदान सिंह चौहान- हिन्दी साहित्य का अस्सी बरस,(सं. विष्णुचंद्र शर्मा) स्वराज प्रकाशन, संस्करण 2007, पृ. 53
12. आलोचना- नामवर सिंह (संपादक), अंक -जनवरी-मार्च 2001
13. रामविलास शर्मा- परंपरा का मूल्यांकन,राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2004, पृ. 108

नीरज
सहायक प्रोफेसर भारती कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

पत्राचार पता
३२२ C & D ब्लाक , कनिष्क अपार्टमेंट्स
नजदीक मैक्स हॉस्पिटल शालीमार बाग
दिल्ली -88
मोबाइल - 9910560552
ईमेल - niraj1308@gmail.com